DEPARTMENT OF SANSKRIT

SCHOOL OF LANGUAGES

Syllabus

Curriculum Framework

P.G. Classes

Based on National Education Policy - 2020

Date of BoS : 19.09.2022

2022-2023

Doctor Harisingh Gour Vishwavidyalaya

(A central University)

Sagar – Madhya Pradesh - 470003

Postgraduate Curriculum Framework

(Suggestive Guidelines)

Year / Semester	Nature of the Course	Courses		Credits
L 8 **First Year** **SEM -I**	Discipline Specific : Major-1	**SAN- DSM-121**	वैदिक भाषा तथा साहित्य	**06**
	Discipline Specific: Major-2	**SAN- DSM-122**	साहित्यशास्त्र तथा सौन्दर्यशास्त्र	**06**
	Multi-Disciplinary : Major-3	**SAN-MDM-121**	दर्शन	**06**
	Skill Enhancement Course (SEC)	**SAN-SEC-121**	व्याकरण तथा भाषा विज्ञान	**04**
				22
SEM -II	Discipline Specific : Major-1	**SAN- DSM-221**	महाकाव्य	**06**
	Discipline Specific: Major-2	**SAN - DSM-223**	गद्य तथा चम्पू काव्य	**06**
	Multi-Disciplinary : Major-3	**SAN -MDM-221**	नाट्यशास्त्र एवं नाटक	**06**
	Skill Enhancement Course (SEC)	**SAN -SEC-221**	भारतीय काव्यशास्त्र	**04**
			Exit with PG Diploma	**22**

Year / Semester	Nature of the Course	Courses		Credits
L 9 **First Year** **SEM -III**	Discipline Specific : Major-1	**SAN- DSM-221**	आर्षकाव्य एवं पुराण	**06**
	Discipline Specific: Major-2	**SAN- DSM-322**	अर्थशास्त्र एवं धर्मशास्त्र	**06**
	Multi-Disciplinary : Major-3	**SAN-MDM-321**	साहित्य सिद्धान्त	**06**
	Skill Enhancement Course (SEC)	**SAN-SEC-321**	संस्कृत सम्भाषण एवं अनुप्रयोग	**04**
				22
SEM -IV	Discipline Specific : Major-1	**SAN- DSM-421**	उपनिषद् साहित्य	**06**
	Discipline Specific: Major-2	**SAN - DSM-422**	काव्यशास्त्र	**06**
	Multi-Disciplinary : Major-3	**SAN -MDM-421**	संस्कृत में पर्यावरण	**06**
	Skill Enhancement Course (SEC)	**SAN -SEC-421**	पाण्डुलिपि विज्ञान	**04**
				22
Exit with PG Degree			**Total Credits (22X4)**	**88**

M. A. I -Sem. Sanskrit	SAN-DSM - 121 वैदिक साहित्य एवं आख्यान
कुल अध्ययन काल खण्ड/व्याख्यान– 90 6 व्याख्यान × 15 सप्ताह प्रति सेमस्टर	L T P C 6 0 0 6

पाठ्यक्रम : उद्देश्य और परिणाम :

वेद विश्व भर में भारत की अद्वितीय पहचान हैं। इन्हें ज्ञान का भण्डार माना जाता है। इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र वैदिक साहित्य से परिचित हो सकेंगे। ऋग्वेद के प्रमुख सूक्तों के अध्ययन से वे वैदिक देवताओं इन्द्र आदि की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। दार्शनिक सूक्तों का विशेष महत्त्व है। वे बाद की दार्शनिक परम्पराओं के बीज रूप माने जाते हैं। इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र दार्शनिक सूक्तों का ज्ञान प्राप्त करेंगे। यजुर्वेद और अथर्ववेद के सूक्तों के अध्ययन से वे इनकी विषय वस्तु से परिचित हो सकेंगे। वेदांगों का ज्ञान वेदों को समझने के लिए आवश्यक माना जाता है। निरुक्त और पाणिनीय शिक्षा के अध्ययन से छात्र इन वेदांगों के तत्त्वों का ज्ञान प्राप्त करेंगे। यह ज्ञान वेद के मर्म को समझने में सहायक होता है। इससे विद्यार्थियों में विषयगत परिचर्चा का व्यवहार विकसित होगा।

इकाई 1 वैदिक साहित्य का सामान्य परिचय **एवं वेदपाठ प्रक्रिया** (L-18)

इकाई 2 ऋग्वेद– सूक्त– (1) इन्द्र 2.12, (2) उषस् 3.61 (3) पुरुष सूक्त

(4) हिरण्यगर्भ 10.121, नासदीय 10.129 (L-18)

इकाई 3 (अ) अथर्ववेद– स्वराज्ये राज्ञः पुनः स्थापनम् 3.3, मेधाजनन 1.1, कालसूक्त 10.53

(ब) यजुर्वेद–शिवसङ्कल्प 34/1-6, (L-18)

इकाई 4 **पाणिनीय शिक्षा**, निरुक्त (प्रथम अध्याय), आचार्य, वीर, **ह्रद**, गो, समुद्र, वृत्र, आदित्य, उषस्, मेघ, वाक्, उदक, नदी, अश्व, अग्नि, जातवेदस् तथा वैश्वानर के निर्वचन (L-18)

इकाई 5 **शुनःशेप आख्यान एवं वाङ्मनस् आख्यान** (L-18)

नोट – इकाई (20 प्रतिशत प्रश्नों) का उत्तर संस्कृतभाषा में देना अनिवार्य है। तथा व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न की दृष्टि से अध्ययन आवश्यक है

मूल ग्रन्थ :–

1. अभिनववेददीपिका (प्रथम सं.) डॉ. रमाकान्त पाण्डेय, जगदीश पुस्तकालय, जयपुर।

2. निरुक्त (यास्ककृत), उमाशंकर शर्मा ऋषि, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी।
3. पाणिनीय शिक्षा, पण्डित शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
4. शुनःशेष आख्यान – मोतीलालवनारसी दास, वाराणसी, दिल्ल्ली

सहायक ग्रन्थ :–

1. शब्दादर्शः डॉ. बाल शास्त्री, डॉ. रमाकान्त पाण्डेय संस्कृत परिषद्, सागर विश्वविद्यालय, सागर।
2. वैदिक साहित्य और संस्कृति – बलदेव उपाध्याय, वाराणसी, 1980।
3. वैदिक साहित्य तथा संस्कृति – कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी।
4. संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास, आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी, वि.वि. प्रकाशन, वाराणसी

M. A. I -Sem. **Sanskrit**	**SAN-DSM - 122** **साहित्यशास्त्र तथा सौन्दर्यशास्त्र**
कुल अध्ययन काल खण्ड / व्याख्यान– 90 6 व्याख्यान × 15 सप्ताह प्रति सेमस्टर	**L T P C** **6 0 0 6**

पाठ्यक्रम : उद्देश्य और परिणाम :

यह पाठ्यक्रम संस्कृत के साहित्य शास्त्रीय तत्त्वों रस ,अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति तथा औचित्य के सिद्धांतों तथा उनके प्रणेता आचार्यों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय कराने वाला महत्त्वपूर्ण पाठ्यक्रम है। यह पाठ्यक्रम संस्कृत साहित्य शास्त्र के दो महत्त्वपूर्ण ग्रंथों काव्यप्रकाश तथा काव्यादर्श का विशेष ज्ञान कराने वाला है जिससे काव्य का स्वरूप , काव्य का हेतु , काव्य प्रयोजन, काव्य भेद आदि का विस्तारपूर्वक वर्णन करने में अत्यंत उपादेय है। इसके अतिरिक्त संस्कृत भाषा से इतर वर्णित सौंदर्यशास्त्र का भी परिचय कराता है ।इसके अध्ययन से विद्यार्थी में तुलनात्मक सौंदर्यशास्त्र की दृष्टि का विकास होगा।

इकाई 1 प्रमुख **साहित्यशास्त्र**, चिन्तक और उनके सिद्धान्त (रस, अलंकार, रीति) (L-18)

इकाई 2 प्रमुख ग्रन्थ, चिन्तक और सिद्धान्त (ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्य) (L-18)

इकाई 3 सौन्दर्यशास्त्र की अन्य परम्पराएं, आधुनिक विचार तथा साहित्यिक विद्या (L-18)

इकाई 4 काव्यप्रकाश (1, 2 उल्लास) (L-18)

इकाई 5 काव्यादर्श (प्रथम परिच्छेद) (L-18)

नोट – इकाई –4 (20 प्रतिशत प्रश्नों) का उत्तर संस्कृतभाषा में देना अनिवार्य है। एवं व्याख्या की दृष्टि से अध्ययन आवश्यक है।

मूलग्रन्थ –

1. नाट्यशास्त्र, भरतमुनि,
2. काव्यप्रकाश, आचार्य विश्वेश्वर, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी।
3. काव्यमीमांसा, राजशेखर, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी।
4. काव्यालङ्कार, भामह, डॉ. रामानंद शर्मा, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी।
5. काव्यालङ्कारसूत्रवृत्ति, वामन, पं. केदारनाथ शर्मा, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी।
6. काव्यादर्श, दण्डी, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी।

7. ध्वन्यालोक, आनन्दवर्धन, जगन्नाथ पाठक, चौखंभा विद्याभवन, वाराणसी।
8. वक्रोक्तिजीवित, कुन्तक, पं. परमेश्वरदीन पाण्डेय, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
9. औचित्य विचार चर्चा, डॉ. रमाशंकर त्रिपाठी, चौखम्बा संस्कृत सीरीज वाराणसी।
10. भारतीय सौन्दर्य शास्त्र की भूमिका, आचार्य नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1963

सहायकग्रन्थ :–

1. संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास, आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी, वि.वि. प्रकाशन, वाराणसी
2. संस्कृत शास्त्रों का इतिहास, बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
3. अलंकार शास्त्र की परम्परा, डॉ. जगदीश चन्द्र मिश्र, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
4. व्यंजना सिद्धि और परम्परा, डॉ. कृष्णकुमार शर्मा, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
5. शब्दव्यापारविचार, मम्मट, डॉ. रेवाप्रसाद द्विवेदी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी

M. A. I -Sem. Sanskrit	SAN-MDM- 121 दर्शन
कुल अध्ययन काल खण्ड/व्याख्यान– 90 6 व्याख्यान × 15 सप्ताह प्रति सेमस्टर	L T P C 6 0 0 6

पाठ्यक्रम : उद्देश्य और परिणाम :

इस पाठ्यक्रम से भारतीय दर्शन के सामान्य परिचय के साथ वेदान्तसार , वे तर्कभाषा, वेदान्तसार, अर्थसंग्रह और सांख्यकारिका का विशेष अध्ययन कराया जायेगा जिसमे विद्यार्थियों का दर्शन के तात्त्विक महत्त्व का बोध होगा1 जैसा की ज्ञात है कि दर्शन प्रमाण आधारित विषयों को उपस्थित करता है वैसे ही विद्यार्थियों में भी प्रमाण आधारित तथ्यों को उपस्थित करने की क्षमता विकसित होगी एवं जगत् और जीवन के रहस्यों को जानने का अवसर प्राप्त होगा। इस पाठ्यक्रम से विद्यार्थियों में दार्शनिक परिचर्चा एवं तर्क के व्यवहार का विकास होगा।

इकाई 1 भारतीय दर्शन का सामान्य परिचय (L-18)

इकाई 2 वेदान्तसार–पैरा 25 (L-18)

इकाई 3 साङ्ख्यकारिका (कारिका 1–50 तक) (L-18)

इकाई 4 तर्कभाषा– प्रमाण पर्यंत (L-18)

इकाई 5 अर्थसंग्रह धर्मलक्षण,विधिवाक्य, भावना (L-18)

नोट – इकाई – 3 (20 प्रतिशत प्रश्नों) का उत्तर संस्कृतभाषा में देना अनिवार्य है। तथा समीक्षात्मक एवं व्याख्या की दृष्टि से अध्ययन आवश्यक है।

मूलग्रन्थ :–

1. भारतीय दर्शन : बलदेव उपाध्याय
2. वेदान्तसार : सदानंदकृत, चौखम्भा सीरीज आफिस, वाराणसी
3. साङ्ख्यकारिका : ईश्वरकृष्णकृत, चौखम्भा सीरीज आफिस, वाराणसी
4. अर्थसंग्रह, चौखम्भा संस्कृत आफिस, वाराणसी

सहायकग्रन्थ :–

1. मीमांसादर्शन का विवेचनात्मक इतिहास, डॉ. गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
2. भारतीयदर्शन, जगदीश चन्द मिश्र, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
3. तर्कभाषा, केशवमिश्र, व्याख्याकार : आचार्य विश्वेश्वर

M. A. I -Sem. Sanskrit	SAN-SEC- 121 व्याकरण तथा भाषा विज्ञान
कुल अध्ययन काल खण्ड / व्याख्यान– 90 6 व्याख्यान × 15 सप्ताह प्रति सेमस्टर	L T P C 6 0 0 6

पाठ्यक्रम : उद्देश्य और परिणाम :

इस पाठ्यक्रम के द्वारा विद्यार्थी संस्कृतभाषा के वर्णो के उच्चारण के महत्त्व तथा वर्णो के उच्चारण स्थान और प्रयत्न को जानेंगे। वर्णो का शुद्ध उच्चारण करना तथा पालि, प्राकृत अपभ्रश को भी भाषा की दृष्टि से विद्यार्थियों को अवगत कराया जायेगा जिससे उनमें व्याकरण तथा भाषा के प्रति रूचि उत्पन्न होगी। वर्णसमूहरूप पद के सम्यक् अर्थ को समझना व्याकरण का मुख्य उद्देश्य है क्योंकि 'एकःशब्दः सुप्रयुक्तः सम्यगज्ञातः स्वर्गे लोके कामधुग्भवति' पंतलति के कथनानुसार भलीप्रकार जाना और बोला हुआ शब्द स्वर्ग तक की प्राप्ति कराने में सक्षम है। अतः उन वर्णो के महत्त्व को जानने के लिये महाकाव्य, वाक्यपदीयम्, पाणिनीयषिक्षा, भाषाविज्ञान के अन्तर्गत ध्वनिविज्ञान, वाक्यविज्ञान, अर्थविज्ञान आदि से विद्यार्थियों को अवगत कराया जायेगा।

इकाई 1 पस्पशाह्निक, **वाक्पदीयम् – ब्रह्मकाण्ड-1-30** (व्याकरण महाभाष्य से) (L-18)

इकाई 2 कारकप्रकरण (सिद्धान्तकौमुदी से) (L-18)

इकाई 3 वाक्यसंरचना सिद्धान्त (भाषाविज्ञान), अर्थविज्ञान (दिशाएँ एवं कारण) (L-18)

इकाई 4 ध्वनि नियम, भाषा का वर्गीकरण (L-18)

इकाई 5 पालि, प्राकृत तथा अपभ्रंश

पालि – महामंगलसुत्त, मायादेविया सुपिनं, धम्मपदसंगहो, महापजापतिगौतमी गाथा।

प्राकृत – गिरनार अभिलेख, गाहासत्तसई।

अपभ्रंश – भविसयत्तकहा, सन्देशरासकम्। (L-18)

नोट – इकाई –2 (20 प्रतिशत प्रश्नों) का उत्तर संस्कृतभाषा में देना अनिवार्य है। तथा समीक्षात्मक एवं व्याख्या की दृष्टि से अध्ययन आवश्यक है।

मूलग्रन्थ :–

1. व्याकरण महाभाष्य (पस्पशाह्निक), साहित्य भण्डार, मेरठ
2. सिद्धांतकौमुदी, चौखंभा प्रकाशन, वाराणसी।
3. भाषाविज्ञान तथा भाषाशास्त्र, कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

4. पालि प्राकृत तथा अपभ्रंश, रामअवध पाण्डेय, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
5. **पस्पशाह्निक, प्रो. जयशंकरलाल त्रिपाठी, श्रीकृष्णदास अकादमी, वाराणसी।**

सहायकग्रन्थ :–

1. भाषाविज्ञान, भोलानाथ तिवारी
2. व्याकरणशास्त्र का संक्षिप्त इतिहास, श्री रमाकान्त मिश्र, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
3. व्याकरणशास्त्रस्येतिहासः। डॉ. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।

M. A. II -Sem.	**SAN-DSM- 221** **महाकाव्य**
कुल अध्ययन काल खण्ड / व्याख्यान– 90 6 व्याख्यान × 15 सप्ताह प्रति सेमस्टर	**L T P C** **6 0 0 6**

पाठ्यक्रम : उद्देश्य और परिणाम :

इस पाठ्यक्रम के द्वारा विद्यार्थी महाकाव्य के तात्त्विकज्ञान से परिचित होंगे। तदनुसार महाकाव्य की विकास परम्परा को जानेंगे। महाकाव्य के वैषिष्ट्य से अवगत होंगे। पाठ्यक्रम के अन्तर्गत स्थापित बुद्धचरितम् , किरातार्जुनीयम्, नैषधीचरितम्, षिषुपालवधम् आदि महाकाव्यों के अध्ययन से तत्कालीन इतिहास से परिचित होंगे , तथा इन महाकाव्यों के द्वारा रस , भाषा, शैली, छन्द, अलंकार आदि काव्यविधाओं में पारंगत होंगे।

इकाई 1 महाकाव्य का उद्भव एवं विकास (L-18)

इकाई 2 बुद्धचरितम् प्रथमसर्ग 1-50 (L-18)

इकाई 3 किरातार्जुनीयम् प्रथमसर्ग 1-50 (L-18)

इकाई 4 नैषधीयचरितम् प्रथमसग 1-50 (L-18)

इकाई 5 शिशुपालवधम् प्रथमसर्ग 1-50 (L-18)

नोट – इकाई –3 (20 प्रतिशत प्रश्नों) का उत्तर संस्कृतभाषा में देना अनिवार्य है।

मूलग्रन्थ :–

1. बुद्धचरितम्, अश्वघोष, चौखंभा प्रकाशन, वाराणसी।
2. किरातार्जुनीयम्, भारवि, चौखंभा प्रकाशन, वाराणसी।
3. नैषधीयचरितम्, श्रीहर्ष, चौखंभा प्रकाशन, वाराणसी।
4. शिशुपालवधम्, माघ, चौखंभा प्रकाशन, वाराणसी।
5. किरातार्जुनीयम्, डॉ. शशिकुमार सिंह, दिल्ली।

सहायकग्रन्थ :–

1. संस्कृत सुकवि समीक्षा, बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
2. संस्कृत साहित्य का इतिहास, बलदेव उपाध्याय, वाराणसी
3. संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास, आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी, वि.वि. प्रकाशन, वाराणसी

M. A. II -Sem. Sanskrit	SAN- DSM - 222 गद्य तथा चम्पू काव्य
कुल अध्ययन काल खण्ड/व्याख्यान– 90 6 व्याख्यान × 15 सप्ताह प्रति सेमस्टर	L T P C 6 0 0 6

पाठ्यक्रम : उद्देश्य और परिणाम :

संस्कृत साहित्य की अपनी एक लम्बी परमपरा रही है। वह परम्परा गद्य , पद्य तथा चम्पू आदि विधाओं से सदा से अलंकृत होती आ रही है। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी संस्कृत साहित्य की गद्य , पद्य, चम्पूविधा से परिचित होंगे तथा उन गद्यकारों चम्पूकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होंगे साहित्यकारों की इन कृतियों को पढ़कर विद्यार्थी ततकालीन समाज संस्कृति इतिहास को जानते हैं और उन काव्यों के माध्यम से साहित्य समाज का दर्पण किसप्रकार है ? इस तथ्य से विद्यार्थी परिचित होंगे तथा सम्बन्धित विषय पर परिचर्चा की भावना विकसित होगी।

इकाई 1 गद्य एवं चम्पू का सामान्य परिचय (L-18)

इकाई 2 कादम्बरी– **कथामुखम्** (L-18)

इकाई 3 नलचम्पू (वर्षावर्णन पर्यन्त) (L-18)

इकाई 4 दशकुमारचरितम् (अष्टम उच्छ्वास) (L-18)

इकाई 5 गद्य का लक्षण, भेद–प्रभेद, कथा और आख्यायिका में साम्य–वैषम्य (L-18)

नोट – इकाई – 3 (20 प्रतिशत प्रश्नों) का उत्तर संस्कृतभाषा में देना अनिवार्य है। तथा समीक्षात्मक प्रश्न और व्याख्या की दृष्टि से अध्ययन आवश्यक है।

मूलग्रन्थ :–

1. कादम्बरी : वाणभट्टकृत, चौखंभा प्रकाशन वाराणसी।
2. नलचम्पू , चौखंभा प्रकाशन वाराणसी।
3. दशकुमारचरितम्, चौखंभा प्रकाशन वाराणसी।
4. संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास, आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी, वि.वि. प्रकाशन, वाराणसी

सहायकग्रन्थ :–

1. संस्कृत सुकवि समीक्षा, बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
2. चम्पूकाव्य का आलोचनात्मक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, डॉ. छविनाथ त्रिपाठी, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
3. कादम्बरी एक सांस्कृतिक अध्ययन, डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
4. संस्कृत साहित्य का इतिहास, बलदेव उपाध्याय, शरदानिकेतन, वाराणसी, 2001

M. A. II -Sem. **Sanskrit**	**SAN-MDM- 221** **नाट्यशास्त्र एवं नाटक**
कुल अध्ययन काल खण्ड/व्याख्यान– 90 6 व्याख्यान × 15 सप्ताह प्रति सेमस्टर	**L T P C** **6 0 0 6**

पाठ्यक्रम : उद्देश्य और परिणाम :

इस पाठ्यक्रम में नाट्क के शास्त्रीय और साहित्य उभय पक्षों को सम्मिलित किया गया है जिससे विद्यार्थियों को शास्त्र और साहित्य दोनों में अंत:संबंध ज्ञान का विकास होगा। नाट्यशास्त्रीय ग्रंथों के रूप में भरत प्रणीत नाट्यशास्त्र तथा धनंजय प्रणीत दशरूपक को सम्मिलित किया गया है। नाट्यसाहित्य के अंतर्गत नाटक के रूप में भवभूतिप्रणीत उत्तररामचरित , प्रकरण के रूप में शूद्रकप्रणीत मृच्छकटिक तथा नाटिका के रूप में हर्षदेव प्रणीत रत्नावली को सम्मिलित कर विद्यार्थियों में नाट्य के विविधात्मक स्वरूप का ज्ञान इस पाठ्यक्रम की विशिष्टता है। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में नाट्य के शास्त्रीय और साहित्यिक पक्षों के ज्ञान के विकास करने में उपयोगी सिद्ध होगा। तथा उमें नाट्य साहित्य के प्रति भावना विकसित करेगा।

इकाई 1 दशरूपकम्– प्रथम एवं द्वितीय प्रकाश (सन्धि, सन्ध्यङ्ग छोड़कर) (L18)

इकाई 2 नाट्यशास्त्र प्रथम अध्याय, द्वितीय अध्याय (मण्डप के प्रकार) (L18)

इकाई 3 उत्तररामचरित (अंक 1 तथा 3 से व्याख्या एवं प्रश्न) (L18)

इकाई 4 रत्नावली नाटिका (L18)

इकाई 5 मृच्छकटिकम् (अंक 1 तथा 5 से व्याख्या एवं प्रश्न) (L18)

नोट – इकाई – 5 (20 प्रतिशत प्रश्नों) का उत्तर संस्कृतभाषा में देना अनिवार्य है।

मूलग्रन्थ :–

1. दशरूपकम् : धनिक–धनञ्जयकृत, चौखंभा प्रकाशन, वाराणसी।
2. रत्नावली : श्रीहर्षकृत, पं. परमेश्वरदीन पाण्डेय, चौखंभा प्रकाशन, वाराणसी।
3. मृच्छकटिकम् : शूद्रककृत, चौखंभा प्रकाशन, वाराणसी।
4. उत्तररामचरितम्, भवभूति, कपिलदेव द्विवेदी, रामनारायण लाल विजयकुमार, इलाहाबाद
5. नाट्यशास्त्र, धर्मेन्द्र कुमार सिंहदेव, संस्कृत परिषद्, सागर

नोट- व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न की दृष्टी से अध्ययन आवश्यक है

सहायकग्रन्थ :–

1. संस्कृत सुकवि समीक्षा, बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
2. संस्कृत साहित्य का इतिहास, बलदेव उपाध्याय, शरदानिकेतन, वाराणसी, 2001
3. संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास, आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी, वि.वि. प्रकाशन, वाराणसी
4. महाकवि शूद्रक, डॉ. रमाशंकर तिवारी चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
5. महाकवि भवभूति, डॉ. गंगासागर राय, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, प्र.सं. 1965 ई.।
6. नाट्यशास्त्र का इतिहास, डॉ. पारसनाथ द्विवेदी, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
7. नाट्यशास्त्रीयानुसन्धानम्, प्रो. रामजी उपाध्याय, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
8. भवभूति और उनकी नाट्यकला, अयोध्या प्रसाद सिंह, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

M. A. II -Sem. Sanskrit	SAN-SEC- 221 भारतीय काव्यशास्त्र
कुल अध्ययन काल खण्ड/व्याख्यान– 60 4 व्याख्यान ×15 सप्ताह प्रति सेमस्टर	L T P C 4 0 0 4

पाठ्यक्रम : उद्देश्य और परिणाम :

काव्य के तात्त्विक ज्ञान के लिए काव्यशास्त्र का ज्ञान अति आवश्यक है। काव्य के सौन्दर्य का आस्वादन करने के लिए काव्यशास्त्र का ज्ञान होना अपेक्षित है। इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र काव्यशास्त्र का विस्तृत परिचय प्राप्त कर सकेंगे। संस्कृत के प्रमुख काव्यशास्त्रियों और उनके सिद्धान्तों की समझ विकसित करने में सहायक होगा। काव्यशास्त्र के प्रमुख विवेच्य विषयों - काव्यप्रयोजन, काव्यहेतु, काव्यलक्षण और काव्य भेदों की विस्तृत जानकारी उन्हें हो सकेगी। प्रमुख सिद्धान्तों की जानकारी उन्हें काव्यशास्त्र की विविधता से परिचित कराएगी। भरत का रससिद्धान्त और उसकी विविध व्याख्याएं छात्रों को नयी दृष्टि प्रदान करने में सहायक होंगी। इससे विद्यार्थियों में विषयगत परिचर्चा का व्यवहार विकसित होगा।

इकाई 1 प्रमुख काव्यशास्त्रियों का परिचय एवं उनके सिद्धान्त–
भामह, वामन, दण्डी, मम्मट, क्षेमेन्द्र, विश्वनाथ, पण्डितराजजगन्नाथ। (L-12)

इकाई 2 काव्यप्रयोजन, काव्यहेतु, काव्यलक्षण, काव्य के प्रकार। (L-12)

इकाई 3 आचार्य कुंतक और वक्रोक्ति सिद्धान्त। (L-12)

इकाई 4 आनंदवर्धन की ध्वनि संबंधी अवधारणा। (L-12)

इकाई 5 भरत का रस सिद्धान्त तथा उस पर विविध व्याख्यान। (L-12)

नोट- व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न की दृष्टि से अध्ययन आवश्यक है

मूलग्रन्थ :–

1. साहित्यदर्पण, डॉ. सत्यव्रत सिंह, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
2. नाट्यशास्त्र, भरतमुनि, धर्मेन्द्र कुमार सिंहदेव, संस्कृत परिषद्, सागर
3. रसगंगाधर, पण्डितराजजगन्नाथ, आचार्य बद्रीनाथ झा, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
4. काव्यप्रकाश, आचार्य विश्वेश्वर, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी।
5. काव्यमीमांसा, राजशेखर, चौखम्बा संस्कृत सीरीज वाराणसी।
6. काव्यालङ्कार, भामह, डॉ. रामानंद शर्मा, चौखम्बा संस्कृत सीरीज वाराणसी।

7. काव्यालङ्कारसूत्रवृत्ति, वामन, पं. केदारनाथ शर्मा, चौखम्बा संस्कृत सीरीज वाराणसी।
8. काव्यादर्श, दण्डी, चौखम्बा संस्कृत सीरीज वाराणसी।
9. ध्वन्यालोक, आनन्दवर्धन, जगन्नाथ पाठक, चौखंभा विद्याभवन, वाराणसी।
10. वक्रोक्तिजीवित, कुन्तक, पं. परमेश्वरदीन पाण्डेय, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
11. औचित्यविचारचर्चा, डॉ. रमाशंकर त्रिपाठी, चौखम्बा संस्कृत सीरीज वाराणसी।

सहायकग्रन्थ :–

1. संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास, आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी, वि.वि. प्रकाशन, वाराणसी
2. संस्कृत शास्त्रों का इतिहास, बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
3. अलंकार शास्त्र की परम्परा, डॉ. जगदीश चन्द्र मिश्र, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
4. व्यंजना सिद्धि और परम्परा, डॉ. कृष्णकुमार शर्मा, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
5. शब्दव्यापारविचार, मम्मट, डॉ. रेवाप्रसाद द्विवेदी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
6. नाट्यशास्त्र का इतिहास, डॉ. पारसनाथ द्विवेदी, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
7. भारतीय सौन्दर्य शास्त्र की भूमिका, आचार्य नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1963